कथा साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र (उपन्यास एवं कहानी)

Time allowed : Three hours **Maximum Marks : 100**

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(क) नारी चाहे कितनी ही कम उम्र की हों, पुरुषों को समझाने में दक्ष होती है। अपनी प्रकृति-प्रदत्त परख की शक्ति के बल पर वे पुरुष की नस-नस पहचान जाती है। एक पुरुष के साथ रहता उसका साथी जो काम वर्षों में नहीं कर पाता, एक स्त्री चन्द दिनों में ही कर लेती है। इसीलिये तो सेवा का काम स्त्रियों के जिम्मे ही दिया जाता है। शालिनी और दद्दाजी में दुगुनी उम्र का फासला था। फिर भी कभी-कभी दद्दाजी शालिनी को बड़े निरीह, भोले-भाले दिखते थे।

अथवा

अस्ताचल को जाता सूरज लाल हो रहा था। सबके आगमन और गमन की

questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner

गति एक ही होती है। यही नियति भी है। मनुष्य के बचपन-सा भोला-भाला, निरीह, पराश्रित बुढ़ापा हो जाता है उसका। प्रकट होता सूरज भी उतना ही लाल होता है, जितना डूबता हुआ। एक में आशा, उल्लास, संकल्प एवं गति होती है। दूसरा हारा-थका, उल्लासहीन, संकल्पहीन, निस्तेज होता है। उगते सूरज की लालिमा आँख झपकते दमकती जाती है। प्रकाश फैलता जाता है। डूबते सूरज की लालिमा गदराती जाती है, अंत में पश्चिमी क्षितिज को रक्तिम करता, वह एक शीतल आग का गोला ही बना रहता है।

(ख) मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती हैं। जन्म भर की घटनाएँ एक-एक करके सामने आती है। सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं। समय की धुन्ध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।

अथवा

नाम सन्तान से नहीं चलता। नाम अपनी सुकृति से चलता है। तुलसीदास को देश का बच्चा-बच्चा जानता है। सूरदास को मरे कितने दिन हो चुके। इसी प्रकार कितने महात्मा हो गये हैं,उन सबका नाम क्या उनकी सन्तान ही की बदौलत चल रहा है? सब पूछो, तो सन्तान से जितना नाम चलने की आशा रहती है, उतनी नाम डूब जाने की सम्भावना रहती है। परन्तु सुकृति एक ऐसी वस्तु है, जिससे नाम बढ़ने के सिवा घटने की आशंका रहती ही नहीं।

(ग) तमाम सड़के है जिन पर वह जा सकता है... लेकिन वे सड़कें कहीं नहीं पहुँचतीं। इन सड़कों के किनारे पर है, बस्तियाँ हैं, पर किसी भी घर में वह नहीं जा सकता। उन घरों के बाहर फाटक हैं, जिन पर कुत्तों से सावधान रहने की चेतावनी है, फूल तोड़ने की मनाही है और घण्टी बजाकर इन्तजार करने की मजबूरी है।

अथवा

मजदूर खिसियाकर उठ जाता है और सोना जमीन पर थूक देती, जैसे कह रही हो कि इस दुनिया के हर कोने पर मर्द खड़ा मिलेगा, कभी प्रेमी के रूप में, तो कभी बलात्कारी के रूप में। मगर जो पति ढूंढ़ने निकलो तो एक भी कायदे का आदमी नजर नहीं आयेगा, जिसके साथ उम्र एक छत के नीचे गुजार दी जाये। मैं तो यूं ही भली। न मेरा कोई ठौर-ठिकाना, न मैं किसी घर की मालकिन। दुनियाँ की आबादी हूँ और हालात की शहजादी हूँ। इन मर्दों को अब कौन समझाये?

2. ''ज्यों मेंहदी को रंग'' उपन्यास के नामकरण की सार्थकता बताते हुए उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिये।

अथवा

''ज्यों मेंहदी को रंग'' उपन्यास में दद्दाजी का आदर्श चरित्र मानवीय व्यक्तित्व से असाधारण दिखाई देता है।'' इस कथन के आलोक में दद्दाजी का चरित्र-चित्रण कीजिये।

3. कहानी कला के तत्वों के आधार पर ''उसने कहा था'' कहानी की समीक्षा कीजिये।

अथवा

''पूस की रात'' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सिद्ध कीजिये कि यह एक परिवेश प्रधान कहानी है।

4. ''कमलेश्वर मध्यवर्गीय संवेदना के सशक्त हस्ताक्षर है।'' इस कथन की समीक्षा

questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner

"खोई हुई दिशाएँ" कहानी के आधार पर कीजिये।

अथवा

"मेरा घर कहाँ?" कहानी में सोना को निम्नवर्गीय संघर्षशील नारी के प्रतिनिधि पात्र के रूप के रूप में चित्रित किया गया है। उसके चरित्र की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

5. हिन्दी उपन्यास साहित्य के उद्भव और विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिये।

अथवा

कहानी के प्रमुख तत्वों का उल्लेख करते हुए सिद्ध कीजिये कि तात्विक दृष्टि से उपन्यास एवं कहानी पूर्णत: भिन्न विधाएँ हैं।

6. निम्नलिखित में से किन्हींदो पर टिप्पणियाँ लिखिये:

(i) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी (ii) जैनेन्द्र की कहानी कला

(iii) मनोवैज्ञानिक उपन्यास (vi) हिन्दी के प्रमुख आंचलिक उन्यासकार

(v) कहानी एवं उपन्यास का स्वरूप तथा परिभाषा

questionpaperresult.com

Scanned by CamScanner